Unit -5 :-

Rise of Maratha Power in the leadership of Shiva Ji

–: शिवाजी का प्रशासन :–

सैनिक प्रतिभा के साथ साथ शिवाजी में उच्चकोटी की प्रशासनिक क्षमता भी अत्याधिक थी। शिवाजी एक महान शासन थे, क्योंकि वही गुण जो एक योग्य सेनापति के होने चाहिये एक सफल संगठनकर्त्ता तथा राजनीतिज्ञ के लिए भी वांछनीय हैं वे उनमें उच्च कोटी के मौजूद थे।

उनके प्रशासन को निम्न बिन्दूओं आधार पर समझेंगे –

1. केन्द्रीय शासन –

शिवाजी का केन्द्रीय स्वेच्छाचारी और निरंकुश शासन था। राज्य की सारी शक्तियां शिवाजी में केन्द्रीत थी वे स्वयं राज्य के सर्वेसर्वा थे और उसके आदेशों का सभी पालन करते थे। वे सम्पूर्ण शासन पर अपना कड़ा नियंत्रण रखते थे और समस्त पदाधिकारियों पर वह अपनी कड़ी दृष्टि रखते थे यद्यपि शिवाजी का शासन स्वेच्छाचारी था, परन्तु वे बड़ा उदार थे। वे अपनी प्रजा का हमेशा ध्यान रखते थे। शिवाजी को परामर्श देने के लिये एक मंत्री परिषद होती थी, इस परिषद मे कुल आठ मंत्री होते थे, इन्हे **अष्ट प्रधान** कहा जाता था। प्रत्येक मंत्री को एक विभाग सौंप दिया गया था, और वह अपने विभाग को सुचारू रूप से संचालित करने के लिये पूर्ण रूप से उत्तरदायी होता था।

Dr Kavita Sharma

आठ मंत्री और उनके कार्य तथा विभाग–

➢ **पेशवा या प्रधानमंत्री –** आठ मंत्रियों में पेशवा या प्रधानमंत्री का स्थान सबसे ऊँचा होता था। उसका कार्य राज्य के कल्याण के लिए होता था। वह राजा की अनुपस्थिती में उसका प्रतिनिधि होता था। राज्य के अन्य विभागों में आपसी मेल जोल बनाए रखना एवं विभागों की जांच करना उसका प्रमुख दायित्व होता था।

➢ **अमात्य–** इसका मुख्य कार्य राज्य की आर्थिक स्थिती पर नियंत्रण रखना होता था। यह अर्थ विभाग का प्रधान होता था। अमात्य आय व्यय का हिसाब रखता था।

➢ **सचिव–** इसका मुख्य कार्य राज्य के पत्रों की जांच पड़ताल करना होता था कि वे पत्र उचित शैली में लिखे गए हैं अथवा नहीं इसके अलावा महाल और परगना के लेखाओं की जांच करना भी सचिव का ही कार्य था।

➢ **मन्त्री–** यह एक राजा का निजी सलाहकार होता था और यह दरबार की दैनिक घटनाओं का लेखा जोखा रखता था।

➢ **सुमन्त–** यह एक विदेश मंत्री की तरह कार्य करता था। दूसरे राज्यों से पत्र व्यवहार करना तथा दूसरे राज्यों के राजदूतों को राजा से मिलने देने का निर्णय करना इसी का कार्य था।

➢ **सेनापति–** सेना से सम्बन्धित कार्य करना इसका प्रमुख कार्य था। सैनिकों की भर्ती करना और उन्हे प्रशिक्षण देना तथा उन पर अनुशासन रखना इसी विभाग का कार्य था।

Dr Kavita Sharma

➢ **पण्डितराव–** शिवाजी का राज्य हिन्दू धर्म पर आधारित था अतः उनके यहां धर्म से सम्बन्धित कार्य को देखने वाला विभाग पण्डितराव के निर्देशन में कार्य करता था।

➢ **न्यायाधीश–** न्यायाधीश राज्य के सभी दीवानी तथा फौजदारी मामलों का निर्णय करता था। इसके अलावा राज्य के अन्य न्याय के प्रमुख अधिकारियों की नियुक्ति भी इसी विभाग द्वारा की जाती थी।

इन आठ अधिकारियों में से पण्डितराव और न्यायाधीश के अलावा अन्य छह अधिकारियों को सैनिक कार्य भी करने पड़ते थे। उन्हें सेनानायक के रूप में भी कार्य करना पड़ता था। उन्हें सैनिक तथा असैनिक दोनों कार्य करने होते थे। इन समस्त अधिकारियों मंत्रियों को प्रायः नगद वेतन दिया जाता था।

2. प्रांतीय प्रशासन–

शिवाजी का स्वराज्य तीन भागों में विभाजित था और प्रत्येक क्षेत्र पर एक अधिकारी नियुक्त होता था। जो इस प्रकार थे –

➢ **उत्तरी क्षेत्र–** इसमें पूना से लेकर सल्हर तक का क्षेत्र शामिल था। इसमे उत्तरी कोंकड़ का क्षेत्र भी सम्मिलित था। इसका प्रशासन प्रेशवा मोरोपंत पिंगले के नियंत्रण में था।

➢ **दक्षिणी कोंकड़ –** यह प्रदेश उत्तरी कनारा तक विस्तृत था। इसका प्रशासक अन्ना जी दत्तो के हाथों में था।

➢ **दक्षिण के जिले –** इसमें सतारा से लेकर धारवाड़ और कोफाल तक प्रदेश शामिल था। इसका प्रशासक दत्ता जी पंत के सुपूर्द था।

Dr Kavita Sharma

इन तीन प्रदेशों को परगनों और परगनों को तालेकों में विभाजित किया था। इनके अंतगर्त तरफ और मौज आते थे।

3. राजस्व प्रशासन –

शिवाजी ने राजस्व के क्षेत्र में अनेक सुधार कार्य किए थे। उनसे पहले इस क्षेत्र पर काई स्थाई शासन नहीं था अतः वहां राजस्व व्यवस्था ठीक नहीं थी। शिवाजी ने अपने आधीन क्षेत्रों के वंशानुगत जमींदारों की शक्ति को समाप्त करने का प्रयास किया। ***प्रोफेसर निर्मल कुमार के अनुसार*** *"यद्यपि निश्चित रूप से यह कहना कठिन है कि शिवाजी ने जमींदारी प्रथा को समाप्त कर दिया था। फिर भी उनके द्वारा भूमि एवं उपज के सर्वेक्षण कराने और भू स्वामी और बिचौलियों की स्वतंत्र गतिविधियों पर नियंत्रण लगाए जाने ऐसी सम्भावना के संकेत मिलते हैं। उन्होंने बार बार किए जाने वाले भूहस्तांतरण पर प्रतिबंध लगाने का प्रयास भी किया। हांलाकी इसे पूरी तरह समाप्त करना उनके लिए सम्भव नहीं था। इस सबको देखते हुए कहा जा सकता है कि इस नई व्यवस्था से किसान प्रसन्न हुए होंगे और उन्होंने इसका स्वागत किया होगा क्योंकि बीजापुरी सुल्तानों के अत्याचारी मराठा देशमुखों की व्यवस्था से यह बहुत अच्छी थी।"*

इसके साथ शिवाजी ने भविष्य में जमींदारी व्यवस्था को न पनपने देने के लिए अपने कर्मचारियों को वेतन के रूप में भूमि न देनें का निर्णय किया था। वे अपने सभी अधिकारियों तथा मंत्रियों को नगद वेतन देते थे।

Dr Kavita Sharma

शिवाजी ने मलिक अम्बर की भू राजस्व व्यवस्था को कुछ फेरबदल के साथ अपनाया था। उन्होंने माप की इकाइयों का मानकीकरण किया। उन्होंने रस्सी की माप के स्थान पर काठी और मानक छड़ी का इस्तेमाल किया। बीस छड़ियों का एक बीघा और 120 बीघा का एक चाबर होता था। उन्होंन अपने क्षेत्र की माप करवायी और समस्त भू क्षेत्र को चाबरों में विभाजित किया। उनके समय में कुल उपज का 33 प्रतिशत राजस्व लिया जाता था। इसके अलावा उन्होंने कृषकों को ऋण भी दिए जिससे वे समय पर खाद बीज खरीद सकें। शिवाजी के राजस्व के दो स्रोत माने गए – सरदेशमुखी और चौथ।

4. <u>सेना प्रशासन –</u>

शिवाजी की शक्ति का प्रमुख स्रोत उनकी सेना थी। अपनी सैनिक शक्ति से उन्होंने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी। अतः अपने सैन्य संगठनों की ओर शिवाजी ने विशेष ध्यान दिया। शिवाजी के पहले तक मराठा सैनिक छह माह तक सेना में कार्य करते थे और शेष छह माह तक वे खेतों में काम करते थे। शिवाजी ने इस व्यवस्था को समाप्त करने स्थायी सेना रखने की प्रथा प्रारम्भ की थी। शिवाजी ने मराठा सरदारों को संगठित करके एक राष्ट्रीय सेना की स्थापना की, जो राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत थी और महाराष्ट्र में स्वराज्य स्थापित करने के लिए अपना सब कुछ निछावर करने के लिये हमेशा तैयार रहती थी। शिवाजी सैनिकों को जागीर देने के स्थान पर नगद वेतन देना अधिक उचित समझते थे। उनकी सेना में राष्ट्र भक्ति, अनुशासन और आज्ञा पालन उच्चकोटी का था। सेना में अश्वारोही, पैदल तथा नौसेना भी शामिल थी। शिवाजी की रण पद्धति

Dr Kavita Sharma

मुगलों की रण पद्धति से बिलकुल भिन्न थी। वे खुले मैदानों में लड़ने की अपेक्षा **छापामार युद्ध प्रणाली** को अपनाते थे। शिवाजी की सेना में घुड़सवार दो श्रेणियों में विद्यमान थीं एक बारगीर और दूसरी सिल्हदार। बारगीर वे घुड़सवार सैनिक थे जिन्हें राज्य की ओर घोडे और युद्ध सामग्री दी जाती थी। सिल्हदार वे सैनिक होते थे जिन्हें अपनी स्वंय की व्यवस्था करनी पड़ती थी। सबसे छोटी इकाई 25 घुड़सवारों की होती थी। इस छोटी इकाई के ऊपर एक हवलदार नियुक्त होता था। हवलदार के ऊपर एक जुमलादार होता था जिसके आधीन पांच हवलदार होते थे। इसके उपरान्त दस जुमलादारों की एक हजारी होती थी और पांच हजारियों के ऊपर पंजहजारी होता था। शिवाजी के पास लगभग 250 किले थे जो उनकी मराठ व्यवस्था एंव उनकी शक्ति के प्रमुख स्रोत थे एवं उनके किले तिहरे नियंत्रण में रहते थे।

5. न्याय व्यवस्था –

शिवाजी की न्याय व्यवस्था हिन्दू धर्म शास्त्रों पर आधारित थी और उन्हीं के अनुसार न्याय होता था। नियमों के विश्लेषण के लिये योग्य पण्डित होते थे। न्यायाधीश केवल ब्राह्मण होते थे जो दीवानी और फौजदारी दोनों तरह के निर्णय किया करते थे साथ ही फौजदारी मुकदमों के लिये एक अधिकारी होता था जो पटेल कहलाता था।

Dr Kavita Sharma

—: शिवाजी के कार्यों का मूल्यांकन :—

शिवाजी का नाम भारत की उन महान विभूतियों में से है जिन पर भारतवर्ष एवं भारत की हिन्दू जनता सदैव गर्व करेगी और उनके नाम को बड़े आदर और सम्मान के साथ लेगी। उनका जन्म ऐसे समय में हुआ जब हिन्दू धर्म को अपमानित करके कुचला जा रहा था। हिन्दू अपनी स्वतंत्रता खो चुके थे और उनके मन्दिरों तीर्थ स्थलों का नष्ट किया जा रहा था। अपनी स्वतंत्रता एवं अपने धर्म की रक्षा के लिए उनके सभी साधन समाप्त हो चके थे। दक्षिण के सभी प्रबल हिन्दू राज्य समाप्त हो चुके थे। कुछ राज्य लगातार पराजय होने के कारण उनका आत्मबल समाप्त हो चुका था और वे मुसलमान राज्यों के सेवक बन गए थे। शिवाजी ने इन परिस्थितियों का भरपूर फायदा उठाया। उनके व्यक्तित्व में अलोकिक आकर्षण था और वे जन्मजात नेता थे। कालान्तर में उन्होंने मराठों की एक कुशल रण सेना तैयार की। देश की प्राकृतिक दशा के अनुकूल उन्होंने छापामार रणनीति को अपनाया और शत्रुओं को सरलतापूर्वक परास्त किया।

शिवाजी बहुत बड़े कुटनीतिज्ञ भी थे। उन्होंने अपने शत्रुओं को कभी संयुक्त नहीं होने दिया। वे एक के विरूद्ध दूसरे शत्रु की सहायता करने लगते थे। इस प्रकार वे अपनी शक्ति को बढ़ाने के साथ साथ शत्रुओं की शक्ति को खत्म कर देते थे।

शिवाजी एक हिन्दूवादी नेता थे उन्होने **हिन्दुवाई स्वराज्य** की स्थापना की किन्तू उनके द्वारा अथवा उनके राज्य में किसी भी प्रकार का मुसलमानों से दुर्व्यवहार नहीं हुआ। उन्होंने प्रजा को समान दृष्टि से देखा। उनकी सेना में

Dr Kavita Sharma

मुसलमानों को भी उनकी योग्याता के अनुसार जगह प्राप्त होती थी। उनके द्वारा जीते गये राज्यों में मुस्लिम स्त्रियों या बच्चों के साथ कभी कोई न तो दुर्व्यवहार होता था और ना ही अपमानित नहीं किया गया और वे महाराज छत्रपति शिवाजी के नाम से विश्वविख्यात हुऐ। *वास्तव में शिवाजी का नैतिक स्तर बहुत ऊँचा था।*

Dr Kavita Sharma